30/11/1967 गुरुवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– तुम्हें पाके हमने जहाँ पा लिया है, जमीं तो जमीं, आसमाँ पा लिया है.........

ओम् शांति! मीठे–2 रूहानी बच्चों ने, अनेक बच्चों ने। अभी तो थोड़े हैं; परन्तु ये अनेकाअनेक बच्चे हो जाएँगे; क्योंकि इस समय में तो बच्चे बने ही हो, प्रैक्टिकल में जिसको कहा जाता है; परन्तु फिर भी तो इनको, प्रजापिता ब्रह्मा को जानते तो सभी हैं ना; क्योंकि नाम ही है इनका 'प्रजापिता'। कितनी प्रजा? प्रजा तो बहुत हैं/ढेर हैं। तो सब धर्म वाले, सब इनको मानेंगे ज़रूर। जिससे रचना हुई मनुष्यमात्र की, जैसे बाबा समझाते हैं ना– भई, वो हैं हद के पिता, वो भी ब्रह्मा हैं; परन्तु हद के हैं; क्योंकि उनका भी सिजरा बनते हैं ना! बाबा ने समझाया कि उनका भी सरनेम। सरनेम से सिजरा बनते हैं हर एक का। जिसका–2 जो सरनेम है, उनका फिर सिजरा बनते हैं। तो वो हो गए हद के और ये फिर हैं बेहद के। नाम ही है इनका 'प्रजापिता'। अभी इन बच्चों को, प्रजापिता प्रजा रचते हैं; परन्तु लिमिटेड हाँ 5,10,2,1 और कोई न भी रचे, ये तो ज़रूर रचेंगे। ऐसे कोई कह सकेंगे– इनको संतान नहीं हैं? नहीं, इनको तो बुद्धि में आता है कि इनका संतान तो सारी दुनियाँ है; क्योंकि पहले–2 ही तो ये होते हैं– प्रजापिता ब्रह्मा। उसको फिर जो जो मुसलमान होते हैं, वो भी तो 'आदम' कह देते हैं, 'बीबी' कह देते हैं। वो किसको कहते हैं? किसको तो कहते होंगे ना! ज़रूर जो पहले–2, जिससे बहन–भाई बनते हैं, वो ही तो होंगे ना! तो जो भी हैं, किसी–न–किस भाषा में, एडम–ईव– ये किसके नाम पर कहते हैं? ये भी प्रजापिता ब्रह्मा आदम, आदिदेव–आदिदेवी। तो ये भी तो प्रजापिता ब्रह्मा के लिए कहेंगे। तो अभी समझते हो कि इनके जो हम बनते हैं, पीछे जो भी नेशनलिटी होगी, वो सभी इनको मानेंगे कि बरोबर एक हद के पिता, दूसरा बेहद के पिता। हद और बेहद हमेशा होती ही रहती है; क्योंकि जैसे ये बेहद का सुख देने वाला, तो जानते हो बच्चे कि हम जो पुरुषार्थ करते हैं सो वो बेहद स्वर्ग के सुख के और ये जान करके यहाँ आते हो तकदीर बनाने के लिए। तो ये जानते हो कि हम आते हैं यहाँ बेहद के बाप से बेहद का सुख का वर्सा पाने और ये बुद्धि में भी है कि बरोबर स्वर्ग में बेहद के सुख और नर्क में फिर बेहद के दुःख भी कह सकते हैं; क्योंकि बेहद के दुःख भी तो आने वाले हैं ना बच्चे! बहुत–2 दुःख आने वाले हैं, हाय–2 करते रहेंगे ना बच्चे! जब मरेंगे, ये सभी होगा, तो सबसे अंदर के हाय और क्या कर सकते हैं– 'हाय राम, हाय राम'। तो ये तो बच्चे समझते हैं अभी; क्योंकि बाप ने बैठ करके सारे विश्व के आदि,मध्य,अंत का राज़ सुनाए। आते संगमयुग पर, अंत में हैं; परन्तु ये बैठ करके किसके लिए आते हैं यहाँ? तुम बच्चों को, जो भी मनुष्य–सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते हैं, वो ही बताने के लिए आते हैं। तो बच्चे तो बैठे हैं, सामने बैठे हैं, सुनते हैं, पुरुषार्थ भी करते हैं। अभी ये तो दोनों हुए ना बच्चे– मात–पिता। ये मात–पिता से, देखो बच्चे इतने हैं, मात–पिता से, ऐसे बेहद के मात–पिता से कोई दुश्मनी रखेंगे? नहीं! क्योंकि उस मात–पिता से तो देखो कितना मिलता है! तो गाते भी हैं ना– तुम मात–पिता, हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे। कहाँ है सुख! इस समय में किसके पास बाहर में सुख है? नहीं, तो ये गायन होता है ना उस मात–पिता का। तुम पिता तो है, माता फिर कहाँ? माता तो किसको नहीं कहेंगे ना! सभी ब्रदर्स हैं और वो बाप है और सभी आत्माएँ हैं और वो परमपिता परमात्मा है। ये तो बच्चे समझ ही जाते हैं। और–2 दूसरा कोई भी 'मदर' नहीं बुलाते हैं, दूसरे–2 धर्म सभी 'फादर' बुलाते हैं। यहाँ हैं बच्चे, गाते हैं। दूसरा कभी भी कोई नहीं गाते हैं– मात–पिता, तुम मात–पिता, हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा ते सुख घनेरे। तो अभी ये तुम बच्चे जानते हैं ना कि बरोबर अभी हम पढ़ रहे हैं। बाबा हमको मनुष्यों से देवता बना रहे हैं, कांटे से फूल बना रहे हैं। फिर बहुत ही नाम हैं ना और खिवैया है, बागवान है। खुद बागवान है। बाकी जो तुम ब्राह्मण हैं, वो सभी अनेक प्रकार के माली। देखो, माली होते हैं ना, मुगल गार्डन

का भी माली। जाको, बगीचे जाकर देखो। उनका पे भी देखो कितनी अच्छी मिलती होगी। बागवान भी तो नंबरवार होते हैं, माली भी तो नंबरवार होते हैं ना! बागवान तो भले एक गाया हुआ है; पर माली देखो कितने अच्छे–2 फूल बनाते हैं। तो तुम भी बच्चे जानते हो, फूलों में किंग ऑफ फ्लावर्स भी होते हैं। तो ज़रूर किंग होगा तो क्वीन भी होंदी/होगी। अभी ये भी तुम जानते हो– बरोबर ये जो गार्डन ऑफ फ्लावर्स सतयुग में, किंग भी होती है, क्वीन भी होती है और फ्लावर्स होते हैं। भले वो किंग एण्ड क्वीन होते हैं या महाराजा–महारानी कहें। वो फ्लावर्स तो नहीं हैं ना फिर! जभी पतित बनते हैं तो कांटे बन जाते हैं। जब वाममार्ग शुरू हो जाते हैं, रावण का राज्य शुरू हो जाते हैं, तो फिर कांटे बनते जाते हैं। तो बनते जाते हैं तहाँ कि आ करके तमोप्रधान बड़े–2 कांटे बन जाते हैं, बात मत पूछो! बड़े कांटे देखे हैं कभी, सुने हैं तुम लोग ने कभी? बड़े कांटे उनको कहा जाता है, रस्ता चलते वो कांटा लगाकर गंद कर–करके ये भाग जाते हैं। उसको कहेंगे (फिर), अजामिल भी उनको कहा जाता है। तो ये जो गाए जाते हैं। अभी तो समझ तो सकते हैं ना सभी! जो भी यहाँ बच्चे बैठे हैं, वो तो समझते हैं ना कि बरोबर हम आधा में आधाकल्प के अजामिल ज़रूर ठहरे। हिसाब ही हिसाब हुआ ना बच्चे; क्योंकि बाप कहते हैं– सबसे भक्ति भी तुम जास्ती करते हो और तुम्हारा ही चित्र, बाबा ने समझाया था कि जाओ पुरी में, जगन्नाथ में, उसका जो वो गुम्बज है ऊपर का, उनमें देखो ये चित्र बड़े गंदे हैं। वाममार्ग में जब देवताएँ गए हैं, तो देवताओं का ही चित्र दिया है। समझे ना! तो जो मनुष्य कहते हैं ना कि नहीं, वहाँ भी विख है। तो वो बोलता– देखो, देवताएँ हैं, वो भी तो विख में जाते हैं ना! अभी क्या–2 दिखलावे! तो देवताएँ वाममार्ग में गए। तो देखो, देवताएँ वाममार्ग में दिखलाते हैं। वाममार्ग कहा जाता है, जो पतित बनते हैं, विकार में जाते हैं। तो अभी तुम तो बच्चों ने अभी समझ लिया है कि बरोबर ये सब बाहर वाले सब चिल्लाते रहते हैं, विकार में जाते हैं। हम जो यहाँ ब्राह्मण बने हैं, ये विकार से दूर होते हैं, बहुत दूर; क्योंकि ब्राह्मणों को कि भाई–बहन के साथ विकार में जाना, ये तो बहुत क्रिमिनल एसॉल्ट है। है ना बच्ची! ये नामचार बड़ा गंदा हो जाते हैं। ऐसे मत समझो, कोई ये ऐसे काम करते हैं तो कोई ....के दिल से वो कोई हट जाते हैं। नहीं, जैसे तुम बच्चों के जो भी छोटेपन से ले करके कर्म करते हो, तो सुनाते हो ना कि दस बरस में ऐसे किया, बारह बरस में ऐसे किया, ऐसे है ना! तो ज़रूर ये भी तो याद रहते हैं ना कि भई, फलाने समय में मैं ये बहुत गंदा काम किया। बाबा को लिख करके देते हैं ना! बच्चे बहुत जो जो ऑनेस्ट हैं, बाबा कहते हैं– जो वफादार हैं, फरमानबरदार हैं, वो बाबा को आ करके सुनात–सुनाते हैं या लिखाते हैं– बाबा, छोटेपन में हम ये गंदा काम किया, हमको क्षमा करो। तो बाप कहते हैं– क्षमा नहीं करेंगे, हल्का हो जाएँगे ज़रूर, तुम्हारा जो पाप है, जो सच बताते हो सर्जन को। तो कोई भूल जाते हैं क्या? ना, ये भूल नहीं जाते हैं कभी भी। समझे ना! जिनको मालूम पड़ता है उनको तो कभी भी भूला नहीं जा सकता, पिछाड़ी साथ रहते ही हैं। पीछे ये है ज्ञानबल से, फिर ऐसे काम न करे कोई कि उनके लिए है पुरुषार्थ करें। बाकी कोई भूला नहीं जाते हैं ऐसे चीज़ें। नहीं, वो खाती रहती हैं, खाती। देखो खाती है, जब बाप पूछते हैं– तुम भई छोटेपन में? तो बिचारे कितना कहते हैं कि बाबा, हम हम अजामिल था, बाबा, हम ऐसा था। अभी इस जन्म की बात है ना; परन्तु ये तो बच्चों को मालूम है ना कि वाममार्ग में कब से गया है, कब से ये इतना पाप आत्मा बने हैं। तभी तो बाप समझाते हैं ना– बच्चे देखो, तुमको पुण्यआत्मा बनाय करके, फिर पुण्यात्माओं की दुनियाँ ही अलग है बिल्कुल ही। पाप आत्माओं की दुनियाँ, भले दुनियाँ एक ही है। जैसे दो दुनियाँ बनाते हैं ना नक्शों में स्कूल में, गोल दो चक्कर। अभी वो तो उनको तो ये मालूम नहीं है; परन्तु तुम बच्चे तो समझ गए ना, दुनियाँ एक ही है; परन्तु

वास्तव में दो भाग में लाई गई है– एक पुण्यआत्माओं की दुनियाँ जिसको वैकुण्ठ कहा जाता है; एक पापआत्माओं की दुनियाँ जिसको नर्क कहा जाता है, दुःखधाम कहा जाता है। तो गोया जैसे दो दुनियाँ हो जाती हैं– एक सुख की, एक दुःख की। तो देखो, जब दुःख की दुनियाँ आती है तो चिल्लाते हैं, बहुत दुःखी होते हैं। पीछे याद करते हैं कि हमको आ करके इस दुःख से लिबरेट कर–करके, हमको अपने घर ले जाओ; परन्तु घर में तो जा करके बैठने का नहीं, ये अभी बच्चे समझ गए हैं कि घर में जा करके कोई सदीव(सदैव)–2 बैठना नहीं है, पीछे आना है। तो देखो, कितना समय लगता है वहाँ से फिर आने में। तो बाप ने समझाया ना बच्ची– जो भी दूसरे हैं सभी धर्मस्थापक, वो तो इस समय में सभी पतित ही हैं। जबकि वन नंबरवन पतित है तो बाकी सभी पतित होंगे ना! ये सारी दुनियाँ ही पतित है। तो सभी पुकारते हैं उनको। तो अभी पावन बन रहे हो तुम। तुम ये जानते हो पावन बन (कर)के; एम–ऑब्जेक्ट तुम्हारी ये है, और तो कभी कहाँ तुमको एम–ऑब्जेक्ट ये तो कोई दिखलाएगा नहीं। कोई साधु,संत,महात्मा,संन्यासी कभी भी नहीं दिखलाएँगे कि हम ये बन रहे हैं और फिर तुम थे। अब नहीं हैं, फिर बनते हैं। पूज्य थे, अब पुजारी बन गए हो, फिर पूज्य बन रहे हैं। तो पूज्य बनने के लिए पुरुषार्थ चाहिए ना ऐसे! तो पुरुषार्थ देखो बाप कैसे अच्छी तरह से कराते हैं। फर्क देखो कितना बन गया है! तो बस इसको भी देखो, इसको भी देखो। चलो सामने देखो, कि वो देखो और ये देखो। फिर ये जो पढ़ते रहते हैं, ये तो समझते हैं ना अच्छी तरह से कि ये शहजादा बनूँगा। देखेगा तो ये है ना! तो भी देखो इतना है एकदम नंबरवन में, तभी भी भूल जाते हैं। बाबा कहते हैं कि बाप जो कहते हैं कि मामेकम् याद करो, खाने पर, पीने पर, ये पर, उन पर, तो नहीं होते हैं। बाबा ने फिर ये भी कारण बताया है कि ऐसे कितना भी मेहनत करें, कभी हो नहीं सकेंगी; क्योंकि होंगे कर्मातीत अवस्था तब जबकि लड़ाई का मैदान, समय होगा। नहीं तो पुरुषार्थ तो बहुत ही करते। करना तो सबको है ना! इनको भी तो करना है ना; क्योंकि इनको तो तुम बच्चे अच्छी तरह से जान भी गए हैं। समझाते भी हो बहुत अच्छी तरह से। अरे चित्र में ही देखो, कोई–2 सतयुग में कहाँ है बाबा का चित्र? सतयुग में है क्या बाबा का चित्र? नहीं, ये तो कलहयुग में है बाबा का चित्र। देखो, झाड़ के पिछाड़ी में एकदम। तो हो गया ना बहुत जन्म के! देखो नीचे से देखो, ऊपर में देखो, लगाय दिया है ना बाबा का चित्र। भई झाड़ में देखो, वो ऊपर में खड़ा है। देखने में आते हैं तुम लोग को! तो कहाँ खड़ा है? पिछाड़ी में, एकदम पिछाड़ी में खड़ा हुआ है और फिर शुरू में बैठा है तपस्या करने। इतना सहज समझाया है, ये किसने समझाया है? बाप ने समझाया ना, इसने तो नहीं समझाया ना! नहीं! क्योंकि ये बातें ये तो नहीं जानते थे। ये तो जवाहरी था। न कोई ऐसे है कि कोई बहुत गुरू हैं जिन्होंने या बहुत शिष्य हैं जिनको समझाया। नहीं, एक ही बाप है, वो ही बैठ करके समझाते हैं। और कोई दुनियाँ में जानते ही नहीं हैं ये। एक ही नॉलेजफुल है बाप। वो नॉलेज देते हैं और ये भी सभी जानते हैं, एक को ही याद करते हैं– हे परमपिता! आ करके हमारा दुःख हरो, और तो किसको नहीं कह–2 सकते हैं ना! कभी भी न ब्रह्मा के(को), न विष्णु को, न; क्योंकि वो तो देवता हैं ना फिर! कोई वहाँ के जो मूलवतन में रहते हैं उनको देवता थोड़े ही कहा है, आत्माओं को देवता, ऐसे थोड़े ही कहा जाता है। नहीं, देवता सो भी क्या, वो–2 ही विष्णु, वो ही ब्रह्मा; वो ही ब्रह्मा, वो ही विष्णु। ये तो उन्होंने बैठ करके चित्र बनाया, नाम रखा है– जिनके लिए बाप बैठ करके समझाते हैं। है तो यहाँ ना! सूक्ष्मवतन की तो बात ही नहीं निकलती है जैसे कि। सिर्फ तुम बच्चों को साक्षात्कार होते हैं, ये बाबा भी फरिश्ता बन जाते हैं। दूसरा तो कोई नहीं है ना! ये बाबा भी बरोबर फरिश्ता बन जाते हैं; क्योंकि पहले हड्डी–मांस है, पीछे फरिश्ते बन जाते हैं, पीछे आत्मा बन जाती है।

तो ये तो बच्चे भी जानते हैं ना मीठे बच्चे कि देखो, जो ऊपर में है, सो सीढ़ी के एकदम ऊपर में है, सो नीचे में देखो फिर तपस्या कर रहे हैं। तो ये तो कभी, चित्र ही साफ बताते हैं। तो ये अपन को कोई भगवान या ब्रह्मा; वो बाप कहते हैं ना, ब्रह्मा खुद कहते हैं– आई वाज़ नोट वर्थ ए पैनी, ततत्वम्। अभी आई एम वर्थ, आई एम गेटिंग वर्थ पाउण्ड, तत्त्वम, ऐसे कहेंगे ना बच्चे! अभी ऐसे ही थे और बाबा भी ऐसे ही थे। अभी फिर बाप ज्ञान ले रहे हैं, तुम भी बच्चे ज्ञान ले रहे हो। अभी ये कितना सहज है समझने की बातें। ये क्यों बच्चों को बैठ करके अच्छी तरह से समझाया जाता है? क्योंकि जाते हो ना प्रदर्शनी में,...उनमें। तो कभी कोई कहे, अरे बोलो– तुम क्या बोलते हो? ये ऊपर में देखो, कौन खड़ा हुआ है! ये तो एकदम झाड़ के, झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था में तो ये पूरी जड़जड़ीभूत अवस्था। बाप भी कहते हैं– जब इसकी जड़जड़ीभूत अवस्था होती है, जब 60 के बाहर में जब चले जाते हैं, जब वानप्रस्थ/वाणी से परे जाने का लायक बनते हैं, तब मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। है ना! तो देखते हो ना– पिछाड़ी में है, सो पहले आते हैं; क्योंकि तपस्या कर रहे हो राजयोगी। ये देखो, ये भई राजयोगी तपस्या नहीं कर रहे हैं! ये ये कैसे, जो तपस्या कर रहे हैं, वो जभी वो बने ना! तो तपस्या तो तुम भी बच्चे कर रहे हो। सबको तो नहीं कर सकते हैं ना! ये हो सकता है चित्र निकाल करके 10,12,20,25, भई ये चित्र, ये राजयोग सीखते हैं, सो ये जाकर बनेंगे। ताज तो तुमको भी पहनाय सकते हैं ना! ये ये बनाते हैं ना तुम बच्चों का चित्र निकाल करके। फिर वो ताज–वाज दे करके, लाइट दे करके वो बनाते हैं। दिखलाने के (लिए)– ये सो बनते हैं, राजयोग से ये सो बनते हैं। ऐसे तो 10–20 चित्र बना करके प्रदर्शनी में या उसमें रख सकते हैं कि ये इस ये सहज राजयोग से ये बनते हैं। ऐसे बहुत चित्र बनाए हुए हैं। है ना! जो भी वहाँ थे, दो/अढ़ाई सौ, उन सबका ऐसे फोटो निकला हुआ है। ऐसे नहीं कि नहीं हैं; परन्तु कहाँ छुरू–2 हो गया होगा; क्योंकि ये समझाने की बात है ना! बाकी ऐसे चित्र थे, सबने निकाले थे। एक तरफ में ये साधारण, दूसरे तरफ में डबल सिरताज; क्योंकि बन रहे हो ना, प्रैक्टिकल में बन तो रहे हो ना! वो भी तो समझते हो, बन रहेंगे वो ही जो एक्युरेट चले जाएँगे, लाइन क्लीयर बिल्कुल ही और मीठे बनेंगे; क्योंकि बाप कहते हैं ना बच्ची– देखो, ये बीज बोया हुआ है। जब रावण आया हुआ है– तो देहअंहकार,काम,क्रोध,लोभ,मोह। ठीक है ना! अभी ये भी बीज जैसे बोया है ना! तो देखो, बीज कितना लंबा–चौड़ा हो गया है बिल्कुल ही। सारी दुनियाँ, इनमें सबमें ये पार्ट। बीज के ये सलें निकल पड़े हैं और बड़े हो गए हैं। ठीक है ना! अभी फिर इनको मर्ज करना है सबको। फिर भविष्य में कभी भी ये बीज नहीं बोना है। अच्छा भविष्य में नहीं, फिर बाप कहते हैं– अभी संगमयुग है ना, कभी भी ये ये देहअहंकार का बीज नहीं बोना है। अपन को देही समझने की है। कभी भी क्रोध का, ये काम का कभी भी बीज नहीं बोना है। समझा ना! क्योंकि आधाकल्प के लिए बीज न बोएँगे, तो बस आधाकल्प के लिए, फिर वो रावण ही नहीं होता है ना, इसलिए तुम बच्चों को समझ लेना चाहिए, रावण ही नहीं है तो फिर क्या है! तो बाप...बच्चों को बैठ करके हर एक बात, जो न समझे बच्चे, वो बच्चे आ करके समझ सकते हैं। बाकी समझने की एक ही बात रहती है ना– मन्मनाभव, बाप को याद करो और बाप जो कहते हैं– मुझे याद (...)। देखो,...सहज कितना है! पाप है ना! पाप आत्मा बने हैं ना, अजामिल जैसे पापआत्मा हैं ना! तो तुम कहेंगे– अच्छा, अजामिल जैसा पाप आत्मा तो यही रहा; क्योंकि सबसे पिछाड़ी में तो ये है। सबसे पहले में भी तो सबसे पिछाड़ी में, तो इनको ही कहा जाए– सबसे अजामिल। तो देखते हो, फिर यही अजामिल फिर देखो योगबल से कैसे वो बन जाते हैं! अरे बहुत ही साक्षात्कार भी करते हैं, अरे बहुत ही ढेर–के–ढेर साक्षात्कार करेंगे भी। शुरुआत में तो बहुतों ने साक्षात्कार किया। कृष्ण का

साक्षात्कार तो दिल करके सब–कोई करते हैं ना! तो वो तो नवधा भक्ति जब करे, बहुत तीव्र भक्ति करे, तब साक्षात्कार। ये तो ऐसे ही बैठे–2। चलेंगी, वैकुण्ठ चलेंगी? हाँ, चलेंगी। अच्छा, शिवबाबा को याद करो, चलेंगी। चलेंगी–2, ये ध्यान में चली जाती थीं वैकुण्ठ में। खेल करतीं, ये करतीं, बस और हूबहू जैसे कोई साज़–वाज भी नहीं पहनाते थे। वो साज़–वाज उनको पीछे पहनाया बच्चों को। जब वो हेर गई टू मच तब रोज़ आती थीं– हमको बाबा वैकुण्ठ में भेजो। तो श्रृंगार करके आती थीं, ताज–वाज पहन करके। इनके बहुत ही, देखो साज़ थे इनके पास बहुत। तुम बच्चे जानते हो ना कि कितनी बच्चियाँ होती थीं, जो बच्चियाँ आ करके बाबा के पास वहाँ से...पढ़ा करके, आके श्रृंगार कर–करके कोई राधे, कोई कृष्ण, वो मुरली–वुरली नहीं उठाती थीं, नहीं, वो आ करके तैयार हो करके फिर बाबा के पास– बाबा, अभी हम तैयार हो करके, हमको भेजो। अरे, कुछ भी नहीं, अच्छा जाओ बच्चियाँ! बस, ऐसे–2 करते–4 उनकी आँखें बंद हो जाती थीं। फिर जब वैकुण्ठ में जाते थे, फिर आँखें खुल जाती थीं। नहीं तो आँखें बंद करके डांस करे, वो भी तो अच्छा नहीं है ना! ये कायदा ही है, पहले आँखें आहिस्ते–2 करके बंद हो जाएँगी, फिर वैकुण्ठ में पहुँच गईं, फिर आँखें खुलेंगी। बस, पीछे डांस शुरू कर दिया। जितना डांस किया उतना किया, देखा नहीं जास्ती। जैसे बच्चे जास्ती खेल करते हैं तो उनको खेल से बुलाया जाता है ना गुस्से से– अरे, तुमने बहुत खेल किया, अभी आओ तो! बस गोद में लिया, आँखों पर हाथ रख दिया, बस खुल गया झटपट। तो इसको जादू तो कहेंगे ना सब–कोई! पर जादू भी तो है ना बरोबर! ये तो फर्स्टक्लास जादू है ना! कोई मनुष्य को, वो मीरा ने तो तपस्या की, बहुत साधु–संत का संग किया, यहाँ साधु–संत कहाँ है! यहाँ तो किसको साधु कहना, तो हम कहते– ये तो भक्तिमार्ग का टट्टू है। समझा ना! साधु कहना, बाबा को कभी भी कोई–...महात्मा। अरे, महात्मा से मिलना चाहते हो? बोलो– यहाँ महात्मा कोई होता ही नहीं है। है ना! आपका गुरू तो कोई होगा ना! यहाँ बोलो– यहाँ गुरू लोग होते ही नहीं हैं। है ना! यहाँ गुरू होते ही नहीं, गुरू है क्या ये? ये तो बाप है ना! अरे बाप, हम आपके बाप से मिल सकते हैं? तो कौन–सा हमारा बाप है? इनका सबका बाप कौन है? है ना, हाँ शिवबाबा है। ऐसा कोई ने सुना हुआ। शिवबाबा तो निराकार है, तुम किससे मिलने चाहते हो? ऐसे करके भगाय देते हैं उनको। वो घड़ी–2 बैठ करके लेगा, जो शिद्दत करते हैं कि हम करते हैं, तो भगाय देते हैं। क्यों? एक तो, वो तो तमन्ना रहती है ना उनमें पास, कोई आएँगे। अच्छा, कोई आकर अरदास रखेंगे, फलाना करें। अरे ये तो पता है, एकदम कहते हैं कि हम तो बेहद का बादशाह हैं ना! बेहद का मालिक को पैसे–कौड़ी की तो कोई बात ही नहीं है, कभी ख्याल में भी नहीं आवे। समझे ना! शिवबाबा को कभी भी पैसे की बात की कभी भी बुद्धि में नहीं आवे; क्योंकि वो क्या करेगा पैसा? अच्छा, अगर फिर आओ इनके ऊपर, ये भी जब देखते हैं, मैं तो विश्व का मालिक बनने (वाला), पैसा क्या करूँगा? है ना! ये भी ऐसे ही। अच्छा, जो भी दे देते हैं, उनके लिए कुछ–न–कुछ बना ही देते हैं; क्योंकि पैसे तो काम के नहीं हैं ना बच्ची! न शिवबाबा के काम के हैं, न फिर ब्रह्मा के काम के हैं। अगर काम के हैं, तो देखो ये किसके लिए बनाया है? बच्चों के लिए। बाप 1,2,4,5 बच्चे के लिए बनाते हैं ना! ये कितने बच्चे के लिए बनाते हैं? बताओ। ये देखो, बच्चे हैं ना! गरीब हैं, कोई गरीब हैं, कोई लखपति हैं। कोई कोई पैसा देते हैं, दो पैसा। दो पैसा भी आते हैं बच्चे। बाबा, हमारी ईंट लगाय देना। ईंट भी दो आना खा जाती है। कोई आठ आना भेज देते हैं। अच्छा, कोई हज़ारों रुपया दे देते हैं। तो है तो दोनों के लिए एक ना बच्चे! देखो, जहाँ भी जगह खाली है, कोई भी आवे– जाओ, जहाँ चाहिए तहाँ जा करके रहो। फिर कभी देखते हैं कि नहीं, जिन्होंने बहुत–2 दिया है, भई उनको तो सुख देना है ना, तो उनको। कोई आते

हैं, उनको सुख देते हैं, तो बोलते हैं– वाह! परमात्मा के पास भी पास खातिरी। अरे कहाँ पास खातिरी, वो तो ज़रूर पास खातिरी तो ज़रूर करेगा ना! ऐसे थोड़े ही है कि कोई कोई साहूकार आवे और उनको मैं कोठरी में दे दूँ, कहाँ या ऐसे–2। तो उनकी बिचारे की ये वो हो जाएगा ना! फिर कोई कैसा, कोई कैसा, कोई कैसा। कोई कह भी देगा, अच्छा जगह नहीं होगी, बैठ जाते हैं। तो बाप को सब संभाल करनी है ना बच्चों की! कोई बहुत नाजुक होते हैं। देखो, तुम समझो, वो क्या हिरे हुए हैं विलायत में। सबके पास बिल्कुल सफाई, बंगले बड़े, बड़े–2 शाही बंगले, बड़े–2 लाख–2, दो–2 लाख की मोटर, बहुत हैं बच्चे। बाबा बाबा सिंधियों की, सिंधी तो क्या, गुजराती भी हैं, तो सब किस्म के भी हैं। ये काले जो सीदी आते हैं, इतने इनका अफ्रीका के, अरे बात मत पूछें, ये बहुत साहूकार लोग होते हैं, कोई कम नहीं होते हैं! सब–2 हर–2 नेशन में बड़े–2 साहूकार भी हैं, बड़े–2 गरीब भी हैं। तो यहाँ गरीब, यहाँ तो हैं ही बहुत करके तो गरीब ही हैं। अरे, कोटन में कोउ साहूकार। नहीं तो वास्तव में हैं ही, गरीब ही गरीब हैं अक्सर करके, तो साधारण हैं।...ये तो बच्चे समझते हैं कि कोई महल नहीं बनने के हैं, फिर भी ऐसे ही बनेंगे जैसे बच्चे आ करके रहें। है ना! बाबा को तो प्लैन रहता है ना बच्ची– कितना बनाना पड़ेगा, कितने बच्चे होंगे। इतना इतना कोई दूसरा बाप होगा जिनको ये ख्याल होगा कि हमारे पास इतने बच्चे होंगे, इतने मकान बनाने हैं। आएगा किसको बच्चे? बच्चे किसके पास होगा 10,12,15,20। अच्छा पोते, परपोते, तरपोते भी। तुमने अखबार में पढ़ा होगा– अच्छा, भई इसको 150 हैं; अच्छा भई, 200 हैं इनको– पोते, परपोते, तरपोते, फलाने टरे। अच्छा, 200,300,400,500 चलो, भई (इतनी) कोई के पास होगी कोई फैमिली! इस बाबा की फैमिली देखो कितनी बड़ी है! तुम जानते हो कि और भी फैमिली वृद्धि को पानी है। है ना! इतने हैं; परन्तु नहीं, ये तो फैमिली कितनी–3 वृद्धि को पानी है। अरे, ये तो बादशाही स्थापन हो रही है, उसमें तो बहुत ही, कितनी गिनती करके कितनी करते। ये तो बुद्धि में है ना बच्चों के कि शिवबाबा, बापदादा की फैमिली कितनी बनेगी। फिर कहेंगे– प्रजापिता ब्रह्मा। चलो, ये फैमिली देखो कितनी बड़ी हो गई, ढेर–की–ढेर। तो ये बुद्धि में बैठती है ना बच्ची! तो ये कल्प–2 जब बाप आते हैं तभी ये वण्डरफुल बातें हमारे कान पर पड़ती हैं। देखो, कान पर तुम्हारे ये वण्डरफुल बात पड़ती हैं सभी, जिसके लिए बाप के लिए कहाते हैं– हे प्रभु! तुम्हारी गत और मत सबसे न्यारी है। है ना! तो है ना बरोबर न्यारी। कैसे भक्ति में और ज्ञान में फर्क देखो! भक्ति में बहुत मुश्किल कोई–कोई। देखो, मीरा का कितना है! तो बाप ने समझाया ना बच्ची– एक होती है भक्तिमाल, एक होती है रुद्रमाल। तो रुद्रमाल और भक्तिमाल का विचार करो। तो भक्ति शुरू होती है जब रावण–राज्य होते हैं। तो मनुष्य गिरते जाते हैं भक्ति में। भक्ति करते जाते हैं, भक्ति करते जाते हैं, सीढ़ी उतरते जाते हैं। गाई है चढ़ने की माल, रुद्रमाल और फिर ये कौन–सी माला? बताओ। मनुष्य माला कौन–सा फेरते हैं– भक्तिमाल फेरते हैं या रुद्रमाल फेरते हैं? कभी देखा है किसको भक्तिमाल फेरने के लिए? भक्तिमाल कोई बनती है, कभी देखा है, सुना है कान से कि भक्तिमाल? है नाम ज़रूर– धन्ना भगत, फलाना भगत, टीरा भगत, इनकी माल है। नारद वगैरह..., ये मीरा, इनकी भगतों की माल है। ये गाए जाते हैं, इनकी महिमा होती है और रुद्र की माला का किसको भी पता नहीं है। जिसकी पता नहीं है वो फेरी जाती है, उनकी होती नहीं जो फेरें। है कोई, सुना है कभी भक्तिमाल? रुद्रमाल तो सुना है ना! तो क्यों, भक्तों की माल क्यों नहीं फेरते हैं? अरे, वो तो दुर्गति की माल कौन फेरेंगे! रुद्रमाल सद्‌गति की माला है ना बच्चे! तो देखो, बाप हर एक बात, सब बात, न पूछो, तुम पूछा क्या बाबा से माला की बनिस्बत, जो बाबा बताते हैं? नहीं, सब बात तुमको बताते ही रहते हैं। उनको बताना ही है सब;

क्योंकि और तो कोई बताएगा नहीं। सब बताते रहते हैं, तुमको सब ज्ञान। बाकी ऐसे न रहे, कोई ऐसे ज्ञान की बातें। तो स्कूल तो पूरा ही दिन है, जिसको पढ़ना है, वो सभी पढ़ लेंगे ना! जिसको आई.सी.एस. पढ़ना होगा आई.एस., तो सब पुस्तक पढ़ लेंगे ना, बस ना! पीछे तो कोई किताब तो नहीं पढ़ेंगे ना! तो ये भी बाप ऐसे ही समझाते हैं कि अभी मेरे से ये अलफ और बे सीख लो। अभी ये और तो कुछ भी नहीं कहते हैं बच्चों को। ये तो तुम जानते हो जबकि हमको स्वर्ग में जाना है तो दैवीगुण तो ज़रूर धारण करना है। ये तो ऑटोमैटिकली तुम्हारे बुद्धि में आना चाहिए कि हम जब देवता बनते हैं तो देवता गुण भी तो चाहिए ना! अभी तो कोई गुण नहीं है ना बच्चों में! गाते हैं– मैं निर्गुण हारे में कौ गुण नाहीं। देखो, कौ गुण नाहीं, बाकी क्या है? अवगुण हैं ना! तो ये पांच विकार अवगुण हैं; क्योंकि पाँच विकार रावण का राज्य है। तो अवगुण तो ज़रूर होंगे। फिर...5000 बरस के बाद फिर ये अवगुण आहिस्ते–2 प्रवेश करेंगे। फिर ऐसे ही आएँगे 5000 बरस के बाद, पवित्र बनने के लिए। तो बाप सब–कुछ समझाय देते हैं ना बच्चे, शुरू से। अभी तुम जब यहाँ बैठे रहते हो, तो कितना तुमको अच्छी नॉलेज मिलती है। वो भी तो नॉलेज मिलती है ना! वो नॉलेज इतनी खुशी नहीं देती है जितनी ये; क्योंकि ये नॉलेज वण्डरफुल है! अभी तुम्हारी बुद्धि में ये मालूम है कि हम रहने वाले ऊपर में हैं मूलवतन में। अच्छा, सूक्ष्मवतन में तो हैं ये ब्रह्मा–विष्णु, सो भी साक्षात्कार। ये तो समझते हो ब्रह्मा भी यहाँ, लक्ष्मी–नारायण भी यहाँ, ठीक है ना! फिर वहाँ सूक्ष्मवतन में काहे का है? तो ये साक्षात्कार कराते हैं– तो ये जो व्यक्त है सो फिर अव्यक्त हो जाते हैं। ये जो पतित हैं सो फरिश्ते बन जाकर पीछे पावन बन जाते हैं। तो फरिश्तेपने की ये निशानी। बाकी है तो कुछ भी नहीं ना! ये तो समझ गए ना– ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। शंकर तो और बाबा ने समझाया– वाह! ऐसे कोई बैल पर सवारी वरी सूक्ष्मवतन में कहाँ से आई? सूक्ष्मवतन में वरी ये कहाँ से आया? सूक्ष्मवतन में जो कहते हैं– शंकर पार्वती के पिछाड़ी फिदा हुआ और फिर जो वो वीर्य धरती पर पड़ा, वो बिच्छू–टिण्डन पैदा हुआ। अरे पढ़ा है शास्त्र? ये सभी शास्त्रों में लिखा हुआ है जो बाबा बताते हैं ये ये आखानियाँ। अभी अभी कहाँ पार्वती, कहाँ शंकर सूक्ष्मवतन में, कहाँ वो विकार की बात और देखो, क्या–2 बनाया है! तो भक्तिमार्ग में कितनी–2 चरियाई की बातें। तो बाप कहते हैं ना– बरोबर तुम भक्ति करते–2। बाप पूछते रहते हैं– बरोबर देखते हो फर्क, जो कैसे नॉनसेन्स बन गए हो! जो कोई कुछ कहे, हाँ, सत्य, ये भी सत्य। सभी सत्य–4 करते रहे। तो अभी बच्चे समझते जाते हैं और धारण करते जाते हैं और खुशी में भी रहते हैं। ये कोई नई बात थोड़े ही है। हम इन्यूमरेबल टाइम्स (अनगिनत बार) देवताएँ बने हैं यानी डीटी राज्य। अच्छा, डीटी राज्य था ना! अभी ये तो ज़रूर सतयुग में होता ही है। कलहयुग में ये हालत होती है। बीच का बाप ने बताय दिया। तो ये फिरता रहता है ना चक्कर! तो ये बेहद के ड्रामा का ज्ञान मिला ना तुम बच्चों को, ड्रामा फिरता रहता है, छोटा भी फिरता है। वो दो घण्टा और ये तो देखो, कितना बरस और वो विनाशी; ये अविनाशी। ये कोई पूछे– कभी बनाया? तो इनके लिए तो बताय देंगे कि ये ड्रामा अभी बनाया, फलाना। ये एडवर्टाइजमेंट भी होती है– नया खेल आ करके देखो! हाँ दिखलाते हैं ना, गायन–वायन दिखला करके। अच्छा, ये वरी बेहद का ड्रामा देखो कैसा है! मज़े का है ना बच्ची बेहद का ड्रामा, अभी बुद्धि में बैठा ना! तुम्हारे सिवाय दूसरा दुनियाँ में कोई भी ये नहीं जानते हैं। तुम्हारे में भी फिर नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार, ऐसे बच्चे बहुत हैं जिनको कुछ भी नहीं आता है जैसे। समझा! कितना बड़ा ड्रामा है, कितना सहज है, कितना समझाय जाता है। तो इसमें धारणा है ना बच्चे! धारणा ऐसी होती है कि इनको बहुत धारणा बन कर–करके, देखो विचार तो करो, कोई धारणा बन करके विजय माला में पिरोए जाएँगे और उससे कम चले–4 जाओ, वो जाकर चण्डाल भी

बनेंगे एकदम। देखो, कितना फर्क हो जाता है! यहाँ कहाँ प्रेजीडेण्ट देखो, आगे तो महाराजा लोग थे, प्रेजीडेण्ट देखो, कहाँ एक वो गटर साफ करने वाले देखो, फर्क है ना! अच्छा, वहाँ दुःख नहीं है। बाकी प्रजा तो ऐसी होगी ना! पोजीशन्स तो सबका ऐसे होगा ना ज़रूर! पोजीशन तो सब–कोई पाते, पोजीशन बिगर कोई दुनियाँ थोड़े ही चल सकती है। ना, सबका नाम, ओहदा, ऑक्युपेशन सबको अपना–2 मिलता है। अभी तुमको चान्स है कि बहुत ऊँचे–ते–ऊँचा ऑक्युपेशन, तो उसमें एम–ऑब्जेक्ट तुम्हारी। 10–20 ऑक्युपेशन थोड़े ही रखेंगे! हाँ, दो रख सकते हैं; पर क्या उससे कोई कहेगा तुमको, हम राजा/राम–राज्य में जाएँगे? देखो–2, तुम सब कहते हो– हम आए ही हैं यहाँ सत्यनारायण की सच्ची कथा सुनने के लिए। यहाँ रामराज्य के लिए तो नहीं आए हो कि हम चंद्रवंशी बनेंगे, इस ख्याल से तो नहीं आए हो? नाम ही इनका– सत्यनारायण की कथा। अभी कथा वो, वो भी सुनी जन्म–जन्मांतर देखो, आधाकल्प वो सुनी और ये बाप बैठ करके सच्च–2 तुमको नर से नारायण बनाते हैं और तुम जान करके यहाँ आते हो। तो वो छोटी कथाएँ, हाँ उसको क्या कहेंगे? ये झूठी और छोटी कथाएँ। कितने, कितने समय की वो कथा सुनते आते हो? सत्यनारायण जभी होता है, पूर्णिमा होती है, तभी कथा सुनते हो। बस फिर सत्यनारायण कथा, अभी कितनी कथाएँ सुनी होंगी तुम! ज़रूर सुनी होंगी ना कथाएँ! तो 2500 बरस में कितनी दफा सुनी होंगी! बड़ी आयु होगी, तो हर पूर्णमासी यानी हर महीने कथा सुनते आए हो। फिर जन्म–जन्मांतर और क्या हाल हुआ है कथा सुनते–सुनते? सुनते–2 ये बन गए हो। ये बाबा बैठ करके सब बच्चों को समझाते हैं– क्या करते आए हुए हो! क्योंकि सब समझाएँगे ना– पास्ट,प्रेजेण्ट,फ्यूचर! सब समझाएँगे ना– आदि, मध्य और अंत! तो बाप समझाया ना, जो भी संन्यासी, किससे भी जाकर पूछो अभी भी; क्योंकि अगर परम्परा से ये ज्ञान आता होता तो बहुत तुमको समझाते ना– जाओ, कोई राजा के पास देखो, कोई संन्यासी के पास देखो, कोई शास्त्र में देखो। नहीं, बाबा कहते हैं– बच्चो, ये हम तुमको ज्ञान सुनाय करके ये ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है, विनाश हो जाता है, तुम जा करके राजाई पद प्राप्त करते हैं। पीछे ये जो भी तुमको यहाँ सुनाते हैं, ये जो नॉलेज तुमको सुनाते, तुम सब भूल जाते हो एकदम। सतयुग में ये नॉलेजें होती ही नहीं हैं। इसी तरह से ये जो तुम नॉलेजें यहाँ पढ़ती हो बैरिस्टर,वकील,फलाना, बोलो– ये भी खत्म हो जाती हैं। ड्रामा में कोई वो ही थोड़े ही बातें फिर फिर कोई इस समय में रिपीट करेंगी! रिपीट करेंगी पूरे टाइम पर। देखो, बैरिस्टर कोई पढ़ेगा, वहाँ कोई डॉक्टर होगा, कोई अस्पताल होगी, कोई सज़ा खाएँगे? नहीं, नहीं वो ऐसे...। और जेल होंगे? कुछ भी नहीं होंगे। तभी कहा जाता है कि ये तुम–2 अभी तुम गर्भमहल में जाएँगे। अभी तुम तैयारी कर रहे हो, गर्भमहल में जाने के लिए। वहाँ सज़ा–वजा रहती नहीं है, हिसाब चुक्तू हो जाते हैं आराम से; परन्तु टाइम पर तो आना ही पड़ता है ना बच्चे! तो बाप कहते हैं– कभी भी तुम गर्भजेल में भी सज़ा नहीं, ये जो गवर्मेण्ट के जेल हैं, उनमें भी सज़ा नहीं और फिर जो शरीर छोड़ेंगे फिर भी सज़ा नहीं; सज़ा बंद एकदम। तो सज़ा मुक्त, लिबरेट हो जाते हो अर्थात् दुःख से लिबरेट...। तो गायन जाते हैं ना! देखो, यहाँ से तुमको बहुत तारें भी बतावें। पोप आया था, उनको भी तार दिया था कि ये आ करके ये सुनो। वो जो लिबरेटर है, गाइड है और वो आए हैं। तुम भी आ करके ये सभी सीखो योग। है ना! तार में, इतनी लंबी–2 तारें देते रहते थे। यहाँ अपना फर्ज़ है ना! तो आखरीन में जब समय आएगा विनाश का तब उनको याद तो आएगा ना! जैसे बाबा कहते हैं, कोई भी पाप मनुष्य करते हैं तो क्या भूलता थोड़े ही है! नहीं, भले बच्चे बाबा के पास दे जाते हैं– ये बाबा ये ले लिओ, हम हल्का हो जाएँगे। पर हल्का कहने मात्र होता है, बाकी वो वो सज़ाओं से हल्का हो जाते हैं, बाकी कोई भूल थोड़े ही जाते हैं। नहीं, कोई को तीन

बरस से, कोई चार बरस से ले करके पिछाड़ी तक, जो भी कुछ कर्म करते हैं, वो सब उनको याद रहते हैं– अच्छे हों या बुरे हों। कोई भी नहीं होगा, मेरे ध्यान में कोई भी। कोई होगा शायद जो उनको 5/6 बरस के बाद मालूम पड़ता होगा। ये बाबा को तो मालूम है, कि शायद अढ़ाई/तीन बरस से ले करके बाबा को मालूम है सब। समझा ना! क्योंकि गाँवड़ा भटकता था ना बच्ची! छोटेपन में माँ तो मर गई। समझा ना! बाकी बाप सो बच्चे पकड़ करके ले करके.......। सो भी कोई है ना अभी! अपना जन्म भी ये ये जाना और बाबा ने सतयुग,त्रेता,द्वापर,कलहयुग उसका भी समाचार सुनाया, इतने–2 जन्म उनमें पास किए। बाकी हाँ, इस जन्म की प्रैक्टिकल में एक्युरेट याद रहती है, और जन्मों को उसी दूसरी याद नहीं है। इतना समझ गए कि बरोबर ऐसे–2 जन्म लेते आए हुए हैं और इसको तो पूरा मालूम है– मैं तो पूरा एक्युरेट 84 जन्म लिया है, एकदम पूरा। तत् त्वम्; क्योंकि तुम भी मेरे साथ पढ़ते हो ना! तो कितना मज़े की पढ़ाई है ये अच्छी और कैसा अच्छी तरह से पढ़ना भी चाहिए, दैवीगुण भी धारण... और खाली भी हो जाना चाहिए। देखो, ये खाली है ना! बाबा को क्या पड़ेगा, पैसा याद पड़ेगा? पैसा कहाँ याद पड़ेगा? है कुछ। कुछ भी नहीं है। ये तो शिवबाबा को देते हैं, कोई हमको थोड़े ही देते हैं। शिवबाबा को देते हैं, शिवबाबा क्या भूखा है कुछ? बिल्कुल नहीं। कोई भी कहते हैं ना– मैं शिवबाबा को देता है, तो वो–4 बाबा को कंगाल समझते हैं। शिवबाबा को कंगाल समझते हैं क्या, जो विश्व का मालिक बनाते हैं? तो कई–2 होते हैं ना, वो समझते हैं कि हम शिवबाबा को दि(या)। तुम्हारा तुम्हारा सौदा तो शिवबाबा के साथ है ना, इनका तो नहीं है ना! इनने भी तो शिव को दे दिया ना! तो हमको वर्सा तो शिव से लेना है ना! तो जिससे वर्सा लेने हैं उनके लिए कहना कि हमने दिया, भई 500 दिया, हज़ार दिया, दस हज़ार, 20 हज़ार दिया। दिया या लिया? देखो, बड़ा हिसाब है ये। हम अभी जाते हैं शिवबाबा के पास। आते हैं ना यहाँ! शिवबाबा को हम जा करके और 5 रुपया देते हैं, हम इनसे पाँच करोड़ रुपया ले लेंगे। ये दिल में अंदर ये आना चाहिए। और जो ज्ञान पूरा नहीं है, वो समझते हैं– हम शिवबाबा को जाकर 50 रुपया देते हैं, 100 रुपया देते हैं, फिर बाप वो हमको वहाँ देंगे। नहीं, हम कभी भी दिल के अंदर ये नहीं आना चाहिए भूले–चूके भी कि हम कोई देते हैं, पाँच की, दस की, पचास की, ये तो हर एक जैसे होते हैं, नहीं, हम तो बाबा से, अरे जितना देऊँ, सब देऊँ, तो बस फिर तो बादशाही सारी हमारी है। ये नशा आना चाहिए; क्योंकि है ना नशा, वाला है तो सही ना सामने जिनमें प्रवेश किया है। क्या ये, क्या ये, 5–10 लाख, 15 लाख क्या है ये! ये तो कुछ ठीकरी–2। हम तो बादशाह बनते हैं विश्व का मालिक। (रिकॉर्ड– आ जा, आ जा प्रेम दुलारे, आना ही होगा.......)

कि एकदम ऐसे नहीं कि एकदम गिरा देना। आपस में कभी हो जाते हैं ना, तो फिर पढ़ाई छोड़ देते हैं। नहीं, पढ़ाई और याद तो बिल्कुल नहीं छोड़ना, जिससे तुमको मिलता है ना सब–कुछ!

हैलो! मधुबन से बापदादा मीठे–2 सभी सेण्टर्स के ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण कुलभूषण, स्वदर्शन चक्रधारी, सर्विसेबुल, रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का आज गुरुवार के दिन दिल व जान, सिक और प्रेम से यादप्यार और गुडमॉर्निंग।

रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का दिल वा जान, सिक और प्रेम से यादप्यार और गुडमॉर्निंग।